शब्दावली: भाग दो

आराधनालय (*sunagoge*) - ''आराधनालय'' के लिए अंग्रेज़ी भाषा का शब्द ''सिनागोग'' एक मिश्रित शब्द से लिया गया है जो कि ''अगुआई करना'' (*अगो*) के लिए शब्द के साथ उपसर्ग ''साथ'' (सुन) का मेल है जिसका अर्थ है ''जिनकी इकट्ठे अगुआई की गई।'' अपने मूल अर्थ में, यह *इकलीसिया* की तरह ही है (''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में देखिए ''कलीसिया'') और इसका इस्तेमाल एक बार मसीही सभा के लिए किया गया है (याकूब 2:2 में, अनुवादित ''सभा'' शब्द *सुनागोग* है)। नये नियम में, इस शब्द का प्रयोग सामान्यत: यहूदी आराधना-स्थल और/अथवा आराधना के लिए यहूदी सभा के रूप में किया गया है। परम्परा के अनुसार, सिनागोग का आरम्भ बाबुल की दासता के समय हुआ जब यहूदी लोग आराधना के लिए मन्दिर में नहीं जा सकते थे। यहूदी लोग आराधनालय के भवन को मन्दिर के समान पवित्र नहीं मानते थे, और आराधनालय में आराधना करना मन्दिर में की गई आराधना के तुल्य माना जाता था (लूका 6 और प्रेरितों 13 में आराधनालय में आराधना करने के संक्षिप्त विवरण मिलते हैं)। आराधनालयों के अगुओं को सामान्यत: ''प्राचीन'' (ऐल्डर) कहा जाता था। आराधना सभाओं के अलावा आराधनालय की इमारत का यहूदी युवकों के लिए एक कक्षा के रूप में भी प्रयोग किया जाता था। आराधनालय आरम्भ करने के लिए, दस यहूदी पुरुष (जो आराधनालय के काम के लिए समय दे सकते हों) आवश्यक होते थे।

ईश्वर की निन्दा (*blasphemia*) -ईश्वर ''की निन्दा'' (ब्लासफेमी) का अक्षरश: अर्थ है ''अपमानजनक बातें बोलना।'' नये नियम में इसका इस्तेमाल विशेषकर परमेश्वर, मसीह, या पवित्र आत्मा के अपयश की बातों के लिए किया गया है। ''ईश्वरीय बातों के बारे [हल्केपन से, रूखे ढंग से] तिरस्कारपूर्ण बोलना।'' यीशु ने की इस बात को कि वह परमेश्वर का पुत्र (अर्थात, ईश्वरीय) है, यहूदियों ने परमेश्वर की निन्दा माना था (यूहन्ना 10:33; मत्ती 26:65)। व्यवस्था के अधीन ईश्वर की निन्दा का दण्ड मृत्यु था।

चेला (*mathetes*) - यूनानी शब्द के अनुवाद ''चेला'' का अक्षरश: अर्थ है ''सीखने वाला।'' क्योंकि नये नियम के समय में एक विद्यार्थी आमतौर पर अपने शिक्षक की शिक्षा सुनने के लिए जगह-जगह उसके पीछे जाता था, शब्द में ''अनुयायी'' और यहां तक कि ''अनुकारक'' की बात भी है।

डीकन (*diakonos*) - ''डीकन'' शब्द का अक्षरश: अर्थ है ''दास'' अथवा ''सेवक।'' नये नियम में किसी भी सेवा करने वाले के लिए इस शब्द का इस्तेमाल सामान्य अर्थ में संज्ञा या क्रिया रूप में किया गया है जैसे मारथा (लूका 10:40), मरकुस (2

तीमुथियुस 4:11), स्वर्गदूत (इब्रानियों 1:14), और प्रचारक (2 तीमुथियुस 4:5)। कई बार इस शब्द का इस्तेमाल किसी व्यक्ति के लिए विशेष अर्थ में किया जाता था जो कलीसिया में ''एक डीकन'' की पदवी (काम) पर होता था। इस पदवी के लिए योग्यताएं 1 तीमुथियुस 3:8-13 में दी गई हैं। ऐसे ओहदे से संकेत मिलता है कि डीकन का काम सेवा करना है, अगुआई नहीं। नये नियम में, प्राचीन कलीसिया की निगरानी करते थे और डीकन उनके अधीन काम करते थे (बाद के एक भाग की शब्दावली में देखिए ''प्राचीन'')।

परमेश्वर का भय मानने वाला - नये नियम में, ''परमेश्वर का भय मानने वाला'' शब्द कई बार यहूदियों के लिए, और कई बार मसीहियों के लिए प्रयुक्त हुआ है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में आमतौर पर, इसका प्रयोग विशेष अर्थ में किया गया है। किसी अन्यजाति को जो सच्चे परमेश्वर में विश्वास करता और आराधना सभाओं में भाग लेता था, परन्तु यहूदी धर्म में परिवर्तित नहीं हुआ होता था ''परमेश्वर का भय मानने वाला'' माना जाता था (''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में देखिए ''यहूदी मत धारण करने वाले'')।

शास्त्री (*grammateus*) - यूनानी शब्द के अनुवाद ''शास्त्री'' का मूल अर्थ है ''लिखने वाला।'' पुराने नियम में, ''शास्त्री'' शब्द सामान्यत: महत्वपूर्ण घटनाओं (जिसमें राजाओं की बातें भी शामिल होती थीं) को लिखने के लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति को कहा जाता था। नये नियम में, यह शब्द धार्मिक अगुओं के एक गुट के लिए प्रयोग किया जाने लगा (जिसका आरम्भ, यहूदी परम्परा के अनुसार, एज्रा से हुआ [एज्रा 7:6])। शास्त्रियों के महत्वपूर्ण काम पुराने नियम के शास्त्र की प्रतिलिपियां तैयार करने के कारण, उन्हें व्यवस्था के विशेषज्ञ माना जाता था। बहुत से शास्त्री फरीसी थे (''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में देखिए ''फरीसी'')।

सामरी - सामरी जाति अश्शूर की दासता का परिणाम थी। सन 722 ई. पू., अश्शूर के लोग उत्तरी कनान से हज़ारों यहूदियों को गुलाम बनाकर ले गए व कुछ, देश में रह गए थे। अश्शूरी हाकिम ने देश को फिर से बसाने के लिए बाबेल, कूता, और अव्वाहमात से उपनिवेशकों को भेजा (2 राजा 17:24-26; एज्रा 4:2), और इन उपनिवेशकों ने यहूदियों के साथ अन्तरजातीय विवाह कर लिए। परिणामस्वरूप उनसे उत्पन्न होने वाली संतान सामरी कहलाया जिसके लोग आंशिक-यहूदी और आंशिक-अन्यजाति थे। जब यहूदी 538 ई. पू. बाबुल की दासता से फलस्तीन वापस लौटे, तो वे अपनी नस्लीय शुद्धता पर घमण्ड करते थे और सामरियों को नीचा मानते थे। सामरियों ने यहूदियों को पुनर्निर्माण के लिए सहायता की पेशकश की, परन्तु यहूदियों ने उनकी सहायता लेने से इन्कार कर दिया। फिर सामरियों ने गिरिज्जीम पर्वत पर आराधना के लिए अपना अलग स्थान बना लिया (यूहन्ना 4:20)। सामरी लोग पुराने नियम की पहली पांच पुस्तकों को ही धर्मशास्त्र के रूप में मानते थे जो यरूशलेम का उल्लेख आराधना-स्थल के रूप में नहीं करतीं।

पवित्र लोग (*hagios*) - नये नियम में किसी मसीही के लिए ''पवित्र लोग'' शब्द बहुत बार आया (प्रेरितों 9:13, 32, 41; 26:10)। यह शब्द एक व्यक्ति पर लागू

करने पर यूनानी शब्द का अनुवाद ''पवित्र लोग'' का पापरहित सिद्धता से कुछ लेना देना नहीं (कुरिन्थुस में मसीही लोग सम्पूर्ण होने से कोसों दूर थे परन्तु वे ''पवित्र लोग'' थे [1 कुरिन्थियों 1:2; 2 कुरिन्थियों 1:1])। यूनानी शब्द का अक्षरश: अर्थ है ''पृथक (अथवा अलग) किया हुआ।'' इसका अनुवाद ''संत'' या ''शुद्ध'' किए हुए भी हो सकता है। एक प्रकार, हमें मसीही बनने पर परमेश्वर की ओर से उसकी सेवा के लिए अलग किया जाता है। एक और अर्थ में, पवित्र किरण (1 थिस्सलुनीकियों 5:23) चलती रहने वाली प्रक्रिया है क्योंकि हम अपनी ''पवित्र बुलाहट'' के अनुसार जीवन जीने का प्रयत्न करते हैं (2 तीमुथियुस 1:9)।

दुष्ट-आत्माएं:
दुष्ट अलौकिक जीव

मसीह ने जब अपनी व्यक्तिगत सेवकाई प्रारम्भ की, वह देश में जाकर ''प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता'' था (मरकुस 1:39)। बारह चेलों को सीमित आज्ञा (लिमिटेड कमीशन) पर भेजते समय, उसने ''उन्हें सब दुष्टात्माओं और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ और अधिकार दिया'' (लूका 9:1)। ऊपर उठाए जाने से थोड़ी देर पहले, उसने प्रेरितों से वायदा किया था कि वे ''दुष्टात्माओं को निकालेंगे'' (मरकुस 16:17)। प्रेरितों के काम की पुस्तक में कई वृत्तांत हैं जहां प्रेरितों ने अशुद्ध आत्माओं को निकाला (प्रेरितों 5:16; 8:7; 16:16-18; 19:11, 12)।

उदारवादी विद्वान वास्तविक भूत ग्रस्तता का यह कहते हुए इन्कार करते हैं, कि शारीरिक बीमारी को ही अन्धविश्वासी लोग दुष्टात्माओं से पीड़ित मान लेते थे। तथापि, आत्मा की प्रेरणा पाए डॉ. लूका ने शारीरिक बीमारी और भूतों अर्थात ''अशुद्ध आत्माओं के सताए हुए में भिन्नता की।''

''भूत'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द डीमन यूनानी शब्द *डायामोनियोन* का लिप्यान्तरण है। भूतों को ''अशुद्ध आत्माएं'' या ''दुष्टात्माएं'' भी कहते हैं। भूतों के बारे में हमें बाइबल से बहुत कम जानकारी मिलती है, परन्तु अनुमानों की कमी नहीं है (इनका अधिकांश आधार मूर्तिपूजक अन्धविश्वास है)। कई लोगों का विचार है कि भूत उन बुरे लोगों की आत्माएं हैं जो मर गए (जो कि लूका 16 की शिक्षा कि जो धनी आदमी मर गया था और वह पृथ्वी पर किसी के साथ सम्पर्क नहीं कर सका, के दृष्टिकोण के समान नहीं है)। कई लोगों का विचार है कि वे गिराए गए स्वर्गदूत हैं जिन्होंने शैतान के पीछे लगकर विद्रोह किया। परमेश्वर ने हमें उनके बारे में इतना ज्ञान देना पर्याप्त समझा कि उनका अस्तित्व है और यह कि वे शैतान के लिए और उसके साथ काम करते हैं।

मत्ती 12:22-29 में, शैतान को ''दुष्टात्माओं का सरदार'' कहा गया है। शैतान के साथ काम करते हुए दुष्टात्मा, मनुष्यों को गुमराह करने का यत्न करते हैं, इसलिए मूर्ति के लिए बलिदान को दुष्टात्माओं के लिए बलिदान (1 कुरिन्थियों 10:20; प्रकाशितवाक्य 9:20), और झूठी शिक्षा को दुष्टात्माओं की शिक्षा कहा गया है (1 तीमुथियुस 4:1) दुष्टात्माएं पौलुस द्वारा वर्णित आत्मिक शत्रु का अंग (शायद एक बड़ा भाग) हैं: ''क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है, जो आकाश में हैं'' (इफिसियों 6:12)। अन्ततः, दुष्टात्माओं को शैतान व उसे मानने वालों के साथ नरक में फेंका जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:10, 15)।

भूत-ग्रस्तता (एक या अधिक दुष्टात्माओं द्वारा किसी व्यक्ति को जकड़ लेना) मसीह और प्रेरितों के समय तक सीमित समय की बात थी। समय-समय पर शास्त्र में, ऐसे अवसर आए जहां परमेश्वर की चमत्कारी शक्ति के विशेष रूप से दिए जाने की आवश्यकता हुई जैसे कि संसार तथा मनुष्य की रचना, एक विशेष जाति की रचना (मूसा और यहोशू के दिनों में), उस जाति को सुधारने की कोशिश (एलिय्याह और एलीशा के दिनों में), और परमेश्वर के नये लोगों की रचना (मसीह और प्रेरितों) के समय। जब भी परमेश्वर ने अपने मानने वालों को असीमित आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी, स्पष्टतया शैतान और उसके मानने वालों को भी *सीमित* चमत्कारी शक्ति की अनुमति मिली। (पुराने नियम में से एक उदाहरण के लिए, मूसा और फिरौन के जादूगरों की कहानी देखिए [निर्गमन 7:10-12, 20, 22; 8:6, 7, 17-19])। जब विशेष अवसर बीत गया, तो आश्चर्यकर्म करने की योग्यता न केवल परमेश्वर के मानने वालों के लिए बल्कि शैतान और उसके साथियों के लिए भी जाती रही।

नये नियम में, हमें शैतान और उसकी शक्तियों के प्रभाव से सचेत रहने की चेतावनी तो दी जाती है, परन्तु हमें शैतान या दुष्टात्माओं द्वारा किसी को उसकी इच्छा के विरुद्ध सताए जाने के बारे में क्रमवार कम से कम होता बताया गया है। मसीहियों को लिखे गए पत्रों में, दुष्टात्माओं द्वारा किसी के सताए जाने का कोई उल्लेख नहीं है और याकूब तो यहां तक कहता है, ''शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा'' (याकूब 4:7)। इसका अर्थ यह नहीं कि शैतान और उसके भूत अब सक्रिय नहीं रहे। इसका अर्थ यह भी नहीं कि दुष्टआत्मा अब किसी को वश में नहीं कर सकते और उस व्यक्ति से उसकी इच्छाओं के विरुद्ध काम नहीं करवा सकते। यदि शैतान और उसके भूत मेरे या आपके जीवन में ज़रा सा भी प्रभाव रखते हैं, तो यह इसलिए होगा क्योंकि हम उन्हें अपने ऊपर प्रभाव रखने की अनुमति देते हैं। आज हम दुष्टात्माओं से उस प्रकार ग्रस्त नहीं होते जिस प्रकार उनका अस्तित्व नये नियम के समयों में था।